TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4368**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥श्रीगुरुभ्यो नमः॥ ज्ञानचर्चा॥ निरंजन। निर्द्वन्द्व। निर्बाणी। निःशब्द। निर्बन्धन। निर्मोह। निर्बंध। निःसंकल्प। निर-
णा। विवेकपरीक्षा। सहीगी। धर्म...। सत्य परीक्षा। शीलपरीक्षा। शुचि। सत्य। मन। क्षमा। निःश्रे। ...परीक्षा। अनु-
क्षिका। अकौमिकः। अमानिकः। स्थिर। निश्चिंत। ...। समभाव। सुखदुःख। शीतल। सुखदाई। सहजस्वरूप॥ निःअपेक्षा। निरा-
गा। निर्लेपा। निर्द्वंद्व। अनिपरीक्षा। लय। लक्ष। ध्यान। समाधि। इति गोरषनाथ विरचित॥ अथ परीक्षा ना का ग्रन्थ बोल
सहज मं सहली॥ श्री गोरषबोध। गोरषबोवाच। अहे सतगुरु अहे सिष्य। शब्द एक पूछिबो। न करबी रोस। शब्द एक कहिबा हु-
या करी कहिबा। आ एसी योगी कवण विधि रहिबा। पवेडो बाव। स्वयं धरहिया हाटे बाटे रूष बिरष की छाया। तजिबा काम क्रो-
ध लोभ मोह संसार की माया। आपसुं गोष्टि अनंत बिचार। षंडित निद्रा अल्प आहार। गोरषोवाच। आदेश का कव-
ण उपदेश। शून्य का कवण बासा। ... का कवण गुरु। जिस गोरष मछिंद्र बोवाच। आदेश का शून्य पमझ बदेस। शून्य का
निरंतर बासा। ... नसाप ति संयुक्त। कपनम छिडमा॥४॥ गोरषोवाच। कवण मूल। कवण डाल। कवण सो फल। कवण सो पुष्प का-
वण सो विला। मछिंद्रोवाच। मन मूल। पवन डाल। शब्द फल। सुरति वेला। सुणि हो अवधू योगी कवण तत्व ले। फिरे इक केला। श्री-
गोरषोवाच। कवण अमावास्या। कवण सो पूर्णिमा। कहां का मृत्यु समकर्दा लेइ रहिवा। कवण स्थान कि मन तत्त्व मनि द्वै रहइ। म-
तस्य रूप कवण गुरु कहइ। मछिंद्रोवाच। रवि सु अमावस्या। चन्द्र सु पूर्णिमा। अर्द्ध का मध्य रमक थै चढिबा। भग मन स्थान कम-
न उनमनी रहइ। गोरष मछिंद्र गुरु कहइ। गोरषोवाच। आदि का कवण गुरु। धरती का कवण भरतार। शून्य की कवण कर्त्ता-
। का पवने का कवण आधार। मछिंद्रोवाच। आदि का अनादि गुरु। धरती का आकाश भरतार। शून्य की अपसंकलप माधि बैका पोषण

1

२॥ गोरखोवाच॥ मन का कवण जीव। पवन का कवण आधार। ज्ञान का कवण गुरु। साधैवे का कवण द्वार।४ मछेंद्रोवाच।
मन का पवन जीव। पवन का शून्य आधार। ज्ञान का अकलि गुरु। साधिवे का रदोदार।५ गोरखोवाच। कवेठस्यघ
वैशाण। कथं उत्पद्यते मनः। कथं उत्पद्यते वाचा। कथं वा चा विलीयते।६ मछेंद्रोवाचा। अव्यक्त उत्पद्यते प्राण। प्राणादु-
त्पद्यते मनः। मन उत्पद्यते वाचा। वाचा मन विलीयते।७ गोरखोवाच। कहां वसइ मन कहां वसइ शब्द। कहां वसइ
वेंद।८ मछेंद्रोवाच। ह्रदय वसै मन। नासिक वसइ पवन। विंद वसै शब्द।९ गगन वसइ चंद।१० गोरखोवाच। जे ब(ह्र)द
यमहो ता। तब कहां वसइ मन। नासिक हो ता तब कहां वसइ प्रवन। पिं मन हो ता तब कहां वसइ शब्द। गगन न हो-
ता तब कहां वसइ चंद।११ मछेंद्रोवाच। ह्रदय न होता तब निरंतर होता मन। नासिक न होता तब निरंतर होता पव-
न। पिंड न होता तब अतीत होता शब्द। गगन होता न ब्रह्म न जंता चंद।१२ गोरखोवाच। रात्रि न होती दिन कहां
ती आया। दिन रह का सरा त्रि कहां समाया। दीवा बुझा ज्योति कहां लीया वासा। पिंड नहीं प्राण कहां लीया वा-
सा।१३ मछेंद्रोवाच। रात्रि न होती दिन सहज आया। दिन सहज रात्रि मध्य समाया। दीवा बुझा ज्योति निरंतर
लीया वासा। पिंड का प्राण निरंतर निवासा।१४ गोरखोवाच। केदा वि मद्ध चंद कहां वसइ सूर। कहां वसइ नाद बिं-
द मूल। कहां चढि हंसा पीवइ पाणी। यह तत्त्व गुरु कहइ प्रमाणी।१५ मछेंद्रोवाच। अर्ध वसइ सूर। अर्ध वसइ चंद
नाभि वसइ नाद विंद का मूल। गगन चढि हंसा पीवइ पाणी। पत तत्त्व गोरख लो अनुभवानी।१६ गोरखोवाच। कवन न-
र कवन घर वासा। कवन नगर रहर संदरा मासा। कवन पुरुष पाणी कवन स्थि त्रि अस्थिर। कवन गरंति नाप बिता। मछें- १

द्रोवाचा। अतीत घर अविगत घर वासा। अनीत घर रहइ रासा। मन पुरुष पानी पवन पुरुष अस्थिर। अचिंत नगर
रस पवन पति।१८ गोरखोवाच। कवण नाडी शिव संचरइ। कवन रस जीव। माता का गर्भ कवन नाडि स पीव।१९
मछेंद्रोवाच। संखनी नाडि शिव संचरइ। सुषमन समरस जीवा। माता के गर्भि नाभि। वंक नाडि रस पीव।२० गो-
रखोवाच। कवण शून्य ते उत्पद्यते। कवन शून्य ते आप। कवण शून्य सतगुरु कहइ। ते कवन शून्य समाय।२१ मछें-
द्रोवाच॥ सहज शून्य उत्पद्यते। अतीत शून्य ते आप। परम शून्य सतगुरु कहइ। अतीत शून्य समाप।२२ गोरखो-
वाच। कवन शून्य तैयो निपलटइ। कवन शून्य ते वाचा उलटइ। कवन शून्य ते त्रिकुट मार। कवन शून्य ते उतरीये
पार।२३ मछेंद्रोवाच। सहज शून्य ते प्राण निपलटइ। अनति शून्य ते वाचा उलटइ। परम शून्य ते त्रिकुट मारा। अ-
तीत शून्य ल उतरी पार।२४ गोरखोवाच। कवन शब्दी रहइ व्याधि। कवन शब्दी लागइ समाधि। कवन शब्दी जीजि-
वै। कवन शब्दी अजरामर कंध।२५ मछेंद्रोवाच। मन शब्दी रहइ व्याधि। पवन शब्दी लागइ समाधि। गगन शब्दी जीजि-
वै। ग्यान शब्दी अजरामर कंध।२६ गोरखोवाच। कहां हो तौ मन का शुन्य नग्न। कहां तो हो पवन का को आवागमन मा-
न य रहिं ज्ञानी जर[illegible] कवन सुख का ल निरा करइ।२७ मछेंद्रोवाच। ह्रदय हो ता मन का असुख नर। नासिन-
हो ती पवन का आवागमन [illegible] आपघर वैठा जी जरै जरइ। मन सुख काल निराकरइ।२८ गोरखोवाच। स्वामि जी कुज के बन
नाथ। वैक ना च वसा कवन नाम। जब तब जा ली निज कह इधर मां दिशाली करां जइ रइ।२९ मछेंद्रोवाच॥
स्वामि जी कुज करी बिवेक। कवन नाहि वसइ का दि शब्द को गाम। जब तन बाणी निज लहइ। पछि गोदिश्याणी वे 2

नाल्य घर सहि। उत गोरषोवाच। कवन कमल बयसह सास उपाजी। कवन कमल हंसा का बासा। कवन कमल
गुरु दीया लषाइ। कवन कमल रमा रह्या समाया। उत मछेंद्रो०। अर्ध कमल बसह सास उस्यासा। उर्द्ध कमल
हंस का बासा। मध्य कमल गुरु दीया लषाया। अतीत कमल सीं रह्या समाया। उत गोरषो वाच। कवन स्था
न विषमा संधि। कवन दुवारे का बंध। कवन ध्यान मन उनमन रहि। मन सु सुरति काहा लाइ कहि।
मछेंद्रो वाच। त्रिकुटी स्थान विषमा संधि। दसवें दुवारे का बंध। गगन ध्यान मन उनमनी रहइ। गोरष सबद
सु मछेंद्र कहंथि।। गोरषो वाच। स्वामी कवन सु दीया। कवन सुनी कहां काने लकहा होइ जा। ति। उवय देह स्वामी
कहो सुजाय। पवन लाइ कि हि गगन चढाया। मछेंद्रो वाच। स्वामी अरष सु दीया। सबद न सुवा ता। कंडप
ल मर ओहो दुवाली। उरध सोइया तिसो मन जाइ। पवन तेज रर गगन सु माया।। गोरषो वाच। कवन पर चे
समाया मोह छूटइ। कवन पर चढ सं सायर कहूं उडा। कवन पुर चला जा बंध। आत्मा परचे थिर करवे कंधा।। मछें
मछेंद्रो वाच। मन पर चढ समाया मोह छूटइ। पवन पर चढ समाय रहट छूटइ। मन पर चढ लागइ बंध। आत्मा प
परचे थिर करवे कंधा।। गोरषो वाच। कहां दिवा कहां विचारिया। कहां ना विसार्या। कहां दिषि मस्तक सु माइवा। कव
न गति कलरि ना पारं।। मछेंद्रो०। आपा रैक्षि राक्षुवि चारिवा। तबै दक्षि वा वा विसारं। दिष्टि सिद्धि विमस्तक सु
माइवा। अलष नाले उनरि वा पारं।। ५२ इति श्री मछेंद्रनाथ गोरषनाथ संवादे गोरष बोध संपूर्ण।। श्रीः ॥ बा०१